आपातकाल में सृजन फुलवारी

अनिल कुमार तिवारी
'श्याम सागर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अनिल तिवारी 'श्यामसागर'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-147-3
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, अनिल तिवारी 'श्यामसागर'
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ANIL TIWARI 'SHYAMSAGAR'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	तुम स्वतंत्र हो	6
2.	तेरे नग़मे गाएंगे	7
3.	तेरा कोई ज़वाब नहीं	8
4.	यूँ न फेरो नज़र	9
5.	प्रथम गीत	10
6.	ज़ख्म	11
7.	न जानें क्यों	12
8.	क्या हुआ तुझको	13
9.	कुछ इस क़दर	14
10.	अभिलाषा	15
11.	एक ख़्वाब	16
12.	आज का कल्चर	17
13.	कवि हृदय की वेदना	18
14.	पहली किरण	19
15.	मधुरिम स्वप्न	20
16.	इल्म खो बैठे हो!	21

तुम हो स्वतंत्र

तुम लिखो प्रणय के गीत मधुर,
या दर्द में डूबा साज़ लिखो,
तुम लिख दो अम्बर को अवनी
या अवनी को आकाश लिखो!

तुम हो स्वतंत्र,... परतंत्र नहीं,
है अटल सत्य ये,... मन्त्र नहीं,
जीवन के इस दुःख सागर का
होना है कभी अब अंत नहीं,
तुम चाहो तो इस जीने का
जीवन का नया अंदाज़ लिखो!

तुम अपने मन की हर तरंग,
दृग के मोती को लिखो गंग,
तुम मन की सारी व्यथा लिखो,
या झूठे जग की कथा लिखो,
तुम हल कर दो सब कठिन प्रश्न,
या उत्तर में बस "राज़" लिखो!

कुछ फ़र्क़ नहीं है अब पड़ना,
चाहे जो कुछ तुम आज लिखो,
तुम जीवन को मिश्री लिख दो,
या खुद को मुझसे नासाज़ लिखो!

तेरे नग़्मे गाएंगे

सुनो!
जब भी वफ़ा का ज़िक्र चलेगा
तेरे नग़्मे गाएंगे!
तुमको कभी न भूलें हैं हम,
न भूल कभी भी पाएंगे!
वो हाथ पकड़कर तेरा चलना,
दुनिया की नज़रों से बचना,
घंटों ढेरों बाते करना,
याद है तेरा देखना मुड़-मुड़,
तुमको याद भी आता होगा?
जैसे सब तड़पाता मुझको,
तुमको भी तड़पाता होगा?
हम तुम एक नहीं हो पाए,
मिलकर भी ग़र न मिल पाए,
सोंचो इसमें दोष है किसका?
किस्मत का ये खेल है जाना!
रोना-गाना, खोना-पाना!
तुमको कभी न भूले है हम,
न भूल कभी भी पाएंगे,
जब भी वफ़ा का ज़िक्र चलेगा,
तेरे नग़्मे गाएंगे!

तेरा कोई ज़वाब नहीं

तू लाज़वाब है, तेरा कोई ज़वाब नहीं,
दर्द का मेरे जहाँ में मग़र हिसाब नहीं,

दुनिया की सारी हसिनाएँ करती है शिक़ायत मुझसे,
तुम्हारे हुश्न के जैसा कहीं शबाब नहीं,

बांटता फ़िरता हूँ खुशियां मैं ज़र्रे-ज़र्रे से,
मेरे ग़मों का फ़िर भी कोई हिसाब नहीं,

बदज़ुबाँ बेशऱम कहते हैं अब तो लोग मुझे,
मिला है इनके सिवा और कोई ख़िताब नहीं,

ज़ाम उल्फ़त का पिलाओ तो है इनकार किसे,
वर्ना चर्चा ये आम है मैं पीता कभी शऱाब नहीं,

तेरे चेहरे पर मोहब्बत की इबादतें हैं लिखी,
वहम ये तेरा है तेरा चेहरा कोई क़िताब नहीं!

यूँ न फ़ेरो नज़र

देखकर मुझको तुम यूँ न फ़ेरो नज़र,
एक झोंका हूँ पल में गुजर जाऊंगा,
यूंही तिरछी नज़र की नज़र जो पड़ी,
रोक पाउँगा न, खुद मचल जाऊंगा,

क्या हुआ है तुझे, मिलकर मिलती नहीं,
क्या कली दिल के गुलशन में खिलती नहीं,
तुमसे मिल जाएंगे तुमने कह तो दिया,
सच तो ये है मग़र, मैं न मिल पाऊंगा,

हमने समझा तुम्हें, तुमने जाना हमें,
जानकर भी हमें न समझ तुम बनें,
यूँ तो इजहार हमने किया है मग़र,
तुम भी कह दो तो सच में संवर जाऊँगा,

कांच से भी था नाज़ुक ज़िगर ये मेरा,
वक़्त ने है इसे, पत्थरों सा किया,
तुम जो चाहो तो अब पत्थर दिल पर भी मैं,
शौक़ से फ़िर तेरा नाम लिख जाऊँगा!

प्रथम गीत

देख दुर्दशा मातृभूमि की, दृग पावस बन आया होगा,
तब कवि ने गणतंत्र देश में, गीत करुण गाया होगा,

देखा होगा एक ओर महलों के वंदन वारों को,
एक ओर अवनी आँचल में रोते दीन दुखियारों को,
बाज़ारों में सुंदरियों के सौदों पर रोया होगा,
बिफ़र पड़ा होगा अंतर्मन, युगों नहीं सोया होगा!

सिसक पड़ी होगी पीड़ा, लख रक्षक रूप कसाई को,
बिना वस्त्र जब देखा होगा, ममता रूपी माई को,

भीख मांगती अस्मत की, देखा होगा लाचारों को,
देखा होगा तार तार, होते राखी के तारों को,
अमिट उदासी होगी, उर में पछताया होगा,
विकट वेदना में कवि ने तब गीत प्रथम गाया होगा!

ज़ख्म

ज़ख्म है ऐसा कि जहाँ से इसे छुपा न सके,
ये और बात है कि दर्द ज़ुबां पर कभी भी ला न सके,

मेरे हर गीत से आती है दर्द की आहट,
ये ऐसा दर्द है जिसको कभी भी गा न सके,

जहां की बदचली से इतना डर गया हूँ मैं,
प्यार सच्चा भी मिला तो अपना उसे बना न सके,

छुपाए बैठें हैं खंजर मेरे हबीब यहाँ,
यही वजह है कि हम दुश्मन कोई बना न सके,

वो बड़ा कायर, बहुत ही बुज़दिल होगा,
जो ज़ख्म पर ज़ख्म तो खाये, सबक सिखा न सके,

यूँ तो हर ज़ख्म हम मोहब्बत से मिटा देते हैं,
यही वो ज़ख्म है जिसको कभी मिटा न सके!

न जानें क्यों

आज न जानें आँखों से
क्यों मोती उभर कर आएं हैं,
याद किसी सता रही है,
या कोई संदेशा लाये हैं,
बस नहीं चलता कोई दिलों पर
फिर कैसे समझाएं हम,
यादें न हों तेरी जहाँ,
ऐसी जगह कहां पर पाएं हम,
बीत चुका है वक्त खुशी का,
अब ग़म के बादल छाये हैं !
साज़ हो तुम गीतों का मेरे,
तुम ही हो दिल की धड़कन,
आज नहीं हो मेरे तो क्या,
कल तक थे मेरा जीवन,
ये जानकर भी हम तुमसे,
सच्ची प्रीत लगाएं हैं!
एक बंधन से बंधने के बाद,
दूजे से बंधना, ऐसा तो दस्तूर न था
अपनी क़िस्मत में प्यार भी हो,
शायद रब को मंजूर न था,
तुम कहते हो हम हैं तेरे,
हम जानते हैं कि पराये हैं,
आज न जानें आँखों से
क्यों मोती उभर कर आएं हैं!

क्या हुआ तुझको

देखकर जो मुझको जो नज़रें फेर लिया करते हो,

क्या हुआ तुझको, मुझे सिर पे बिठाने वाले,
ज़रूरत क्या थी तुझे मुझसे प्यार करने की,
प्यार करते तो प्यार किया करते यूँ ही,
ज़रूरत क्या थी बाहों में मुझको भरने की,
क्या कहूं तुझको मेरे दिल में समाने वाले,

आग चाहत की मेरे दिल में लगाने वाले,
याद है मुझको जब प्यार से प्यार किया करते थे,
दिल और जान सब निसार किया करते थे,
आज ख़ुद की नजरों से गिरा जाता हूँ,
क्या हुआ तुझको, मुझे दुनिया से बचाने वाले,

आज मेरी ज़िन्दगी में बचा है कोई रंग नहीं,
भर क्यों नहीं देते मेरे बुत को रंगों से सजाने वाले!

कुछ इस क़दर

ज़िन्दगी को कुछ इस क़दर हमने जिया है,
अपने हर एक ज़ख़्म को हमने सिया है!

कट रही थी ज़िन्दगी कुछ इस क़दर,
अश्कों को अपने मय समझ हमने पिया है,

जब मेरे दामन में खुशियां थी कभी आने लगीं,
मन के गुलशन में जब कलियां चंद मुस्काने लगी,

मुद्दतों न भर सके ऐसा ज़ख्म अपनों ने दिया है,
कर भी क्या सकता था इन हालात ऐसे मोड़ पर,

जब चले जाएं अपने ही अपनों से नाता तोड़कर,
तब बेबसी में मैंने खुद से समझौता किया है!

ज़िन्दगी को कुछ इस क़दर हमने जिया है,
अपने हर एक ज़ख़्म को हमने सिया है!

अभिलाषा

है एक अभिलाषा शेषमात्र
एक ऐसी सरिता बहा जाऊँ,
पहुंचाकर जिसको जन-मन तक
कविता का ज्ञान करा जाऊँ,
संक्षेप में इतना समझ लो प्रभु
मेरी कविता सबसे न्यारी हो,
प्रेम मिले इसको इतना कि
जान से सबको प्यारी हो!
है आदि देश भारत मेरा,
यहाँ रहने वाला भारत वासी,
फ़िर कैसा हिन्दू, कैसा मुस्लिम,
कैसा पंडित, कैसा पासी,
यह देश हमारा सर्वोपरि,
गूँजे बाइबिल व कुरान यहाँ,
मोह में फंसे हुए को मोहन,
देते गीता का ज्ञान यहाँ,
शंकर के सुन्दर केशों से,
निकले यहाँ पावन सरिता,
कैसे उन्नति करे विश्व,
यह मार्ग दिखाती है कविता!

एक ख़्वाब

एक ख़्वाब जो देखा है हमने,
उस ख़्वाब की क्या तारीफ़ करूँ!
बस इतना ही कह सकता हूँ,
उसपर मैं फ़िदा हर चीज करूँ!

पर ऐसा कहाँ हो सकता है,
कहीं ख़्वाब भी पुरे होतें है,
है ज़ीस्त मेरी सब हिज्र भरी,
तो चाँद की क्या उम्मीद करुँ!

हमने तो कभी सोचा ही न था,
कोई ख़्वाब में मेरे आएगा,
आ कर के वो चुपके-चुपके,
मेरे दिल को चुरा ले जायेगा!

था चाँद से सुन्दर वो चेहरा,
ज़ुल्फ़ों का हसीं उस पर पहरा,
वो चाँद कहीं मिल जाये तो,
दिल पाने की मैं उम्मीद करूँ!

एक ख़्वाब जो देखा है हमने,
उस ख़्वाब की क्या तारीफ़ करूँ!

आज का कल्चर

उपहास उड़ा रही संस्कृति का,
ये आज की पीढ़ी, ये आज का कल्चर
बुज़ुर्गों के दौर में न था इतना अंतर
शर्म आती है कहने में आज के
बच्चों को चरण स्पर्श,
साड़ी जो थी तन का गहना ,
सिमट कर हो गयी है टॉप, मिनी स्कर्ट,
बदल गया है दौर अब आया शार्ट का ज़माना
संगीत, नृत्य तो कल की बात थी,
अब चलता है रिमिक्स गाना!
इश्क़, दोस्ती गुज़र चुके हैं सब,
अब पैदा हुयी है फ्रेंडशिप,
हर जगह कालाबाज़ारी चलती है टिप,
गुनाहों के दलदल में फंसे,
अभिनेता, बन रहे हैं नेता,
दलबदली के दौर में,
नेता बन गए अभिनेता,
नेता और अभिनेता में गुथी
अभिनेत्री की क्या बात करें,
झुक जाये नज़र स्वयं से ही,
ये फिल्मों में ऐसा नंगा नाच करें!

कवि हृदय की वेदना

प्रकृति की छाँव में बैठा हुआ
एक कवि हृदय,
विरह की वेदना में खोया हुआ कुछ गुमसुम सा,
हांथों में कुछ कागज, नज़र में,
भाव दुःख और विरह के लिए,
प्रकृति का वीभत्स रूप देखकर,
वो सोच रहा था शायद!
क्यों प्रकृति की लपटें रौद्र रूप
हैं धारण किये,
आज इंसान ही इंसान के
लहू की है प्यास लिए,
इसी कश्मक़श में खोया हुआ था कवि निर्मल मन,
चेहरे पर कई भाव, दुःख से,
झुलस रहा था तन,
अंतर आत्मा से तभी एक आवाज
सुनाई दी,
अनुकृति नहीं हो जिसकी, ऐसी
एक आकृति दिखाई दी,
है संसार का भविष्य यह, शायद
यही वो कह रही थी अपनी अदा से
ऐसा भविष्य देखकर फूट गयी कवि हृदय गागर,
तन मन झुलस रहा था अब तक,
अब आँखों से भी बहने लगा था सागर!

पहली किरण

नववर्ष प्रभा की पहली किरण,
नव भाव हृदय में जगा रही है,
सुकुमारि कली जैसे अधरों से,
अमृत की धार बहा रही है,
न हो दीन दुःखी और मलीन कोई
नव वर्ष से आस लगा रही है!
सब भूलें घृणा तृष्णा नफ़रत,
बन जाएं सभी दुश्मन दिलवर,
ऐसी चाह दिलों में जगा रही है,
जो देश के हित बलिदान हुए,
उन वीरों की याद दिला रही है,
गौतम आजाद की भूमि को,
यह नित नित शीश झुका रही है,
हो चित्त सभी का "सागर" सम,
खुशियां जीवन से न कभी हो कम,
यही आस लिए मुस्कुरा रही है,
नव वर्ष प्रभा की पहली किरण,
नव भाव हृदय में जगा रही है!

मधुरिम स्वप्न

सपने भी कितने अज़ीब होते हैं,
तो कभी हृदयस्पर्शी,
कभी कभी तो पूछो ही मत,
कल का सपना ऐसा ही था
कुछ ऐसा,
हवा के वेग की तरह तुम्हारा आना,
बहुत सुखद एहसास दिला गया,
तुम्हारी बातों में,
स्नेह, अधिकार, अपनापन,
चंचलता, अल्हड़पन, बेबाक़ी
और इन सभी के बीच में
वो चोरी-चोरी दर्द का झांकना
यक़ीनन मन में पीर लिए
संगम में स्नान जैसा एहसास करा रहा था,
तुम बोलते रहे और हम
उस अमरत्व को प्राप्त होते रहे
जिसके लिए ऋषियों को
वर्षों कठोर तप करना पड़ता है,
सब सहज में ही मिल रहा था मुझे!
लेकिन कहते हैं न
खुशियों की उम्र बहुत छोटी होती है,
आख़िर था तो सपना ही!
लेकिन सपने में तुमनें जो भांग पिलायी,
जानें क्या मिला हुआ था उसमें,
नशा कम होने का नाम ही नहीं ले रहा,
मिश्री की तलब बढ़ती ही जा रही है!

इल्म खो बैठे हो!

होश में आ जावो नापाक इरादे वालों,
झूठी कस्में और झूठे वादे वालों,
अमन-ए-आलम को डस रहा है जो,
उस फ़न को तुम कुचल डालो,
जिस शै से हो तबाही,
उस शै को तुम बदल डालो,
जिसे कहते हो तुम ज़ेहाद,
और मज़हब की ये लड़ाई है,
हक़ीक़त तो ये है कि,
ये नीयत तेरी नहीं परायी है,
कमनज़र हो तुम!
जो बहाते हो इंसान का लहू,
इल्म खो बैठे हो!
नस्ले-आदम हमारे भाई हैं,
तारीकियों की हस्ती कब तक जी सकोगे?
ज़ख्मों से चाक़ सीना क्या सिल कभी सकोगे?
हैवानियत की जंग
किस धर्म में लिखी है?
जिस धर्म में लिखी हो, हमको ज़रा दिखा दो!
हों जाएं दफ़्न जिससे मासूम ज़िंदगानी,
उसे धर्म ही न समझो!
ऐसे धर्म को जला दो!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आज समूचा विश्व कोरोना नामक महामारी से जूझ रहा है, हमारा देश भारत भी इससे अछूता नहीं है, हम सभी देश के प्रधानमंत्री द्वारा घोषित लॉकडाउन का पालन कर रहे हैं, ऐसे समय में समय का सदुप्रयोग रचनात्मक कार्यों के द्वारा किया जाना स्वयमेव सुखद होने के साथ साथ समाज एवं देश हित में है! ऐसे समय में अंतरा शब्दशक्ति के संस्थापक एवं संपादक आदरणीय समकित सुराना एवं आदरणीया डॉ.प्रीति सुराना जी द्वारा हम लेखकों को साहित्य सृजन की प्रेरणा देना सही मायने में साहित्य की सेवा है!

रचनाकार

अनिल कुमार तिवारी 'श्यामसागर'

Email- anilkumartiwari616@gmail.com

Mobile - 6299281218

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-147-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/